परमधर्मपीठीय अन्तरधार्मिक परिसम्वाद विभाग

ईसाई और जैन: पीड़ित मानवता के साथ एकात्मता

महावीर जन्म कल्याणक दिवस संदेश

2023

वाटिकन सिटी

प्रिय जैन मित्रो,

परमधर्मपीठीय अन्तरधार्मिक परिसम्वाद विभाग - जिसे कुछ समय पहले तक अन्तरधार्मिक परिसम्वाद सम्बन्धी परमधर्मपीठीय परिषद के रूप में जाना जाता था - इस वर्ष 4 अप्रैल को मनाये जानेवाले श्री वर्धमान महावीर के जन्म की 2621वीं जयन्ती पर आपको हार्दिक बधाइयाँ देता है। हमारी मंगलकामना है कि यह आनन्दकारी स्मरणोत्सव आपके दिलों और घरों में शांति लाये तथा आपके परिवारों एवं समुदायों को एकता एवं एकात्मता की भावना से परिपूर्ण कर आशीर्वाद प्रदान करे।

इस बात से कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि आज विश्व के हर कोने में निर्धनों, पीड़ितों और शोषितों की पुकार सुनाई दे रही है। भूख, बीमारी, युद्ध, प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं, आतंकवाद और उग्रवाद, असहिष्णुता एवं घृणा, भेदभाव एवं उपेक्षा के कारण - कभी-कभी धर्म के नाम पर भी - असंख्य लोगों की पीड़ा, सभी के लिए गंभीर चिंता का स्रोत बनी हुई है। समाज में दूसरों की पीड़ा की परवाह न करनेवाले व्यक्तियों एवं समूहों की चिन्ताजनक तरीके से बढ़ती संख्या इस विषय को और भी बदत्तर बना देती है। यह बहुत दुखद है कि विश्व भर में ऐसे लोगों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ये परिस्थितियाँ स्पष्ट रूप से हमें दुखी और निराश करती हैं, साथ ही ये एकमात्र मानव परिवार के कल्याण के बारे में चिंतित रहनेवाले सभी लोगों का आह्वान करती हैं कि वे इनके व्यावहारिक समाधान ढूँढने हेतु एकजुट होवें। इन जटिल और कठिन परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में हम आपके साथ कुछ विचारों को साझा करना मददगार समझते हैं कि ख्रीस्तीय एवं जैन धर्मानुयायियों के लिये यह आवश्यक है कि वे एक साथ खड़े हो जायें तथा उनके लिये आशा के चिन्ह एवं सहायता के स्रोत बनें

एकात्मता, जैसा कि संत जॉन पॉल द्वितीय ने इंगित किया है, एक प्रामाणिक नैतिक गुण है। यह दूसरों के दुर्भाग्यों के प्रति कोई अस्पष्ट करुणा की भावना नहीं है, बल्कि सभी की भलाई के लिए ख़ुद को समर्पित करने का एक अटल और दृढ़ संकल्प है (दे. विश्व पत्र, सोल्लीचीतूदो रेई सोश्यालिस 1987, संख्या 38)। निर्धनों के सन्दर्भ में, इसका अर्थ है "हमारे पास जो थोड़ा-सा है उसे उनके साथ साझा करें जिनके पास कुछ भी नहीं है, जिससे कि कोई भी वंचित न रहे" (सन्त पापा फ्राँसिस, निर्धनों को समर्पित विश्व दिवस के लिए संदेश 2022)। यह उन लोगों के लिये जो हर तरह के अन्याय से उत्पीड़ित हैं न्याय का विषय भी है (दे. सन्त पापा फ्राँसिस, आम दर्शन समारोह, 2 सितंबर 2020)। चाहे जो भी रूप एकात्मता धारण करे, वह एक महान कार्य है जो हमारे पीड़ित भाइयों और बहनों के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना से उत्पन्न होता है। एकात्मता को प्रोत्साहित करने के लिये वर्तमान आर्थिक प्रणाली को सामूहिक और रचनात्मक रूप से ऐसी प्रणाली में बदलने की आवश्यकता है जो सन्त पापा फ्राँसिस के शब्दों में, "नैतिक सिद्धांतों के प्रति अधिक चौकस" रहे और जिसकी गतिविधि का लक्ष्य केवल "मानव सेवा" हो, न केवल कुछ लोगों की सेवा, बल्कि सभी की, विशेष रूप से, ग़रीबों की सेवा" (दे. संत पापा फ्राँसिस, उद्यमियों को सम्बोधन, 17 अक्टूबर 2022)।

पीड़ितों और जरूरतमंदों के साथ एकात्मता और एकजुटता की भावना का निर्माण समाज के सभी क्षेत्रों में, व्यक्तियों और समाजों के रूप में, प्रत्येक हमारे भाई और बहन के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में जागरूकता बढ़ाकर किया जाना चाहिए। दूसरों की पीड़ा के प्रति अधिक संवेदनशीलता और उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए किए जा रहे प्रयासों से न केवल सामाजिक मैत्री और मानवीय भ्रातृत्व मज़बूत होंगे,

अपितु एकात्मता की भावना को वर्तमान पीढ़ी से आने वाली पीढ़ी के लिये संचारित करने में भी मदद मिलेगी। यदि समाज के प्रत्येक स्तर पर विकसित की जाये तो एकात्मता की फसल सही मायने में "वैश्विक" बन जाएगी और भले ही अधिक से अधिक पीड़ित लोगों की पीड़ा का उन्मूलन न कर पायें, कम से कम उसे कम करने में तो निश्चित रूप से, सहायता प्रदान करेगी।

परिवार एकात्मता की प्रथम पाठशाला है। वहां माता-पिता और बड़ों के सदुदाहरण के आधार पर, प्रेम एवं करुणा, एकजुटता एवं साझेदारी, उदारता एवं एकात्मता, देखभाल एवं उत्कंठा के मूल्य विशेष रूप से कमज़ोरों और पीड़ितों के प्रति सीखे और अभ्यस्त किए जाते हैं। सभी उम्र और पीढ़ियों के लोगों के बीच इन मूल्यों को विकसित करने में मदद करने के लिए संचार और सोशल मीडिया की भी प्रमुख भूमिका है। शैक्षिक संस्थान न केवल अकादमिक शिक्षाओं द्वारा, बल्कि प्रशिक्षण के व्यावहारिक रूपों के माध्यम से भी, अपने विद्यार्थियों के बीच एकात्मता के बीज बोने के अनेक अवसर प्रदान करते हैं। धर्मों और धार्मिक नेताओं का आह्वान किया जाता है कि वे सभी मतभेदों और विभाजनों के परे हर अनुकूल अवसर तथा हर उपलब्ध साधन का उपयोग कर एकात्मता के बीज बोने और उसके फल एकत्र करने के लिए अपने अनुयायियों को प्रोत्साहित करें।

अपने-अपने धार्मिक विश्वासों एवं आस्थाओं में जड़ीभूत विश्वासियों के नाते, एकात्मता हमेशा से ही हमारे लिए एक प्रमुख मूल्य रहा है। सह-मानवता और सह-ज़िम्मेदारी की भावना रखने वाले पुरुषों और महिलाओं के रूप में, आइए, हम, ईसाई और जैन, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, अन्य धार्मिक परंपराओं के लोगों तथा सभी शुभ-चिन्तकों के साथ हाथ मिलाते हुए, अपने भाइयों और बहनों की पीड़ा को कम करने का हर सम्भव प्रयास करें। हम उनके साथ और उनके लिए खड़े हों जाएँ और इस तरह मानवीय एकात्मता, सामाजिक ज़िम्मेदारी और प्रामाणिक भ्रातृत्व को प्रोत्साहित करने में अपनी छोटी सी भूमिका निभायें।

आप सबको हम महावीर जन्म कल्याणक दिवस-महोत्सव की शुभकामनाएं अर्पित करते हैं!

कार्डिनल मिगुएल एंगेल अयूसो गिक्सो, एमसीसीजे
अध्यक्ष

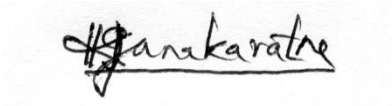

मोन्सिन्ज्ञोर इंदुनिल कोडिथुवाक्कु जनकरत्ने कंकनमलगे
सचिव

DICASTERY FOR INTERRELIGIOUS DIALOGUE
00120 Vatican City

Tel: +39.06.6988 4321
Fax: +39.06.6988 4494

E-mail: dialogo@interrel.va
http://www.dicasteryinterreligious.va